अखंड भारत देश का मानचित्र
भारत
उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः॥

1. गंगा
2. यमुना
3. सिंधु
4. सरस्वती
5. गण्डकी
6. ब्रह्मपुत्र
7. रेवा (नर्मदा)
8. गोदावरी
9. कृष्णा
10. कावेरी
11. महानदी

गंगा

गंगा भारत की पवित्रतम नदी है। सूर्यवंशी राजा भगीरथ इसे धरती पर लायें।

उदगम स्थल उत्तर काशी जिले में गंगोत्री शिखर पर गोमुख।

गंगा किनारे प्रमुख स्थल – ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयाग, काशी, पाटलीपुत्र आदि।

गोमुख से गंगासागर तक 1450 कि0मी0 लम्बाई।

यमुना

यमुना उदगम स्थल यमनोत्री शिखर है।

यमुना किनारे प्रमुख स्थल – दिल्ली, मथुरा, वृन्दावन, आगरा।

यह गंगा के समानान्तर बहते हुए प्रयाग में गंगा में मिल जाती है तथा गंगा के साथ – साथ गंगासागर तक जाती है।

सिंधु नदी भारतवर्ष की ही नहीं विश्व की विशाल नदी है।

उदगम स्थल – तिब्बत में स्थित कैलाश मानसरोवर के पास

बहाव – तिब्बत में 250 कि0मी0। जम्मू कश्मीर में 550 कि0मी0। शेष 2380 कि0मी0 पाकिस्तान में। कुल लम्बाई 3180 कि0मी0।

वैदिक संस्कृति का विकास इसी के किनारे हुआ। मोहन जोदडो व हड़प्पा संस्कृति इसी के किनारे थी।

सरस्वती

उदगम स्थल – हिमालय

बहाव – हरियाणा, राजस्थान, गुजरात होती हुई सिंधु सागर (अरब सागर) में मिलती है।

वर्तमान में यह ऊपर से विलुप्त हो गई है। लेकिन आज भी हरियाणा और राजस्थान प्रदेशों में अन्दर ही अन्दर प्रवाहित होने की खोज मिल रहीं है।
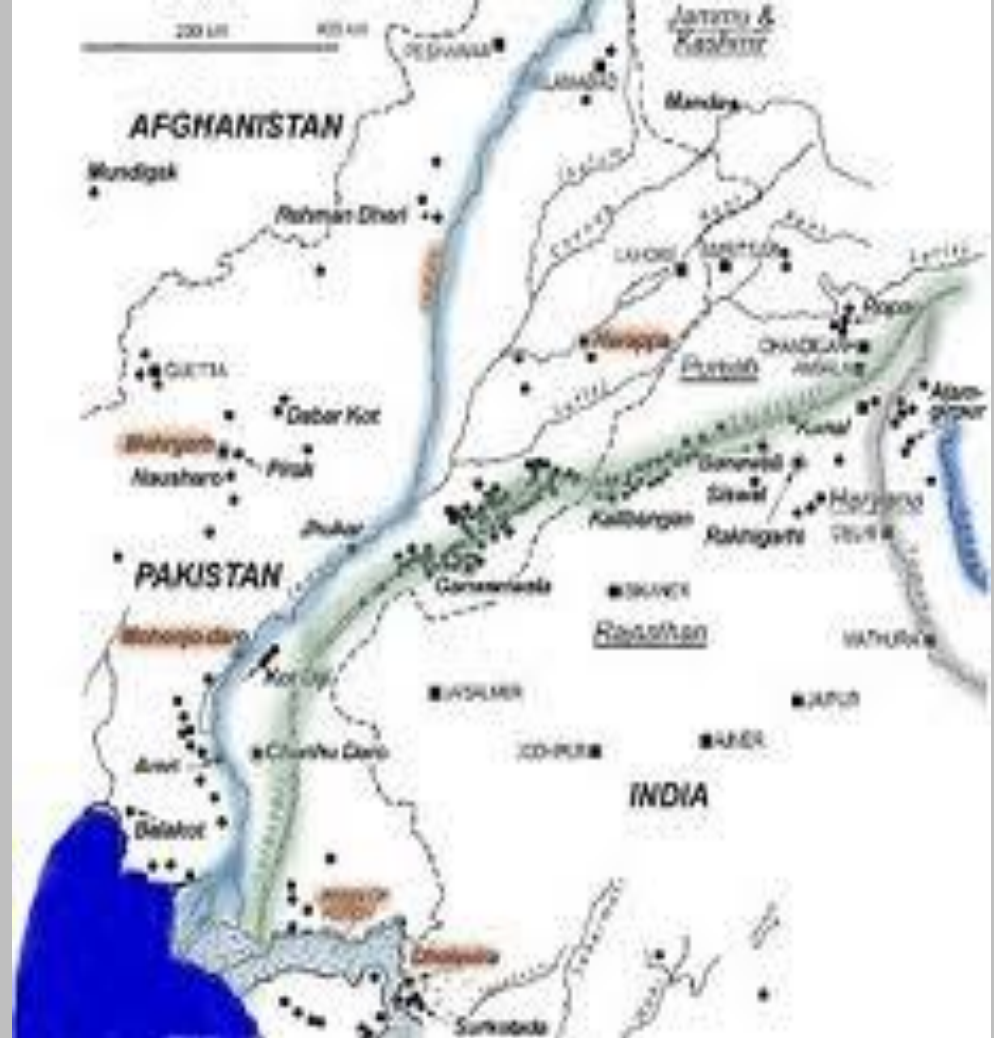
गण्डकी

उदगम स्थल – नेपाल में मुक्तिनाथ से थोड़ा आगे दामोदर कुण्ड से निकलती है।

बहाव – बिहार राज्य में प्रवेश करती है और गंगा में मिल जाती है।

इस नदी में प्राकृतिक और विभिन्न स्वरूप वाले शालिग्राम प्राप्त होते है।

ब्रह्मपुत्र

उदगम स्थल – पवित्र मानसरोवर के पास एक विशाल हिमानी है।

बहाव – तेजपुर, गुवाहाटी, डिब्रुगढ़, शिवसागर आदि।

तिब्बत में इसको सांपो तथा अरूणाचल व असम में इसे लोहित कहा जाता है।

लम्बाई – 2900 कि0मी0

नर्मदा

उदगम स्थल – अमरकंटक से निकलकर अरब सागर तक।

बहाव – ओंकारेश्वर, मान्धाता, शुक्ल तीर्थ, भेड़घाट, जबलपुर, कपिलधारा आदि।

सती अनुसूया का मन्दिर भी पास ही बना है।

लम्बाई – 1300 कि0मी0

गोदावरी

उदगम स्थल – ब्रह्मगिरी (त्र्यंबकेश्वर, नासिक) से निकलकर गंगासागर में मिलती है।

बहाव – पंचवटी, पैठण, राजमहेन्द्री, भद्राचलम, नान्देड़, कोटा , पल्ली आदि।

यह दक्षिण भारत की गंगा भी कहलाती है।

लम्बाई – 1450 कि0मी0

कृष्णा

उदगम स्थल – सह्यादि्र पर्वत माला में महाबलेश्वर के उत्तर में स्थित कराड नामक स्थान से निकलकर गंगासागर मे मिलती है।

बहाव – सतारा, सांगली, रायचूर, विजयवाड़ा, नागार्जुन सागर।

लम्बाई – 1280 कि0मी0

कावेरी

उदगम स्थल – कुर्ग जिले (सह्याद्रि पर्वत) से निकलकर सागर मे मिलती है।

बहाव – श्रीरंगपत्तन, शिव समुद्रम, श्रीरंगम, तंजाबूर, कुंभकोणम, त्रिचिरापल्ली।

लम्बाई – 800 कि0मी0

महानदी

उदगम स्थल – रायपुर जिले (मध्यप्रदेश) के दक्षिण पूर्व में सिंघावा पर्वत से निकलकर उडीसा में कटक के पास सागर मे मिलती है।

बहाव – रायपुर, बस्तर, बिलासपुर आदि

लम्बाई – 860 कि0मी0

विश्व का सबसे लंबा बांध हीराकुण्ड महानदी पर ही बना है।

पंच सरोवर

हिन्दुओं की श्रद्धाभाव के केन्द्र पांच सरोवर है।

1. बिन्दु सरोवर
2. नारायण सरोवर
3. पम्पा सरोवर
4. पुष्कर झील
5. मानसरोवर

बिन्दु सरोवर

बिन्दु सरोवर दो है

1. भुवनेश्वर के बाजार में स्थित। यह एकाग्रता की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। सरोवर के मध्य एक विशाल मन्दिर है इसमें समस्त तीर्थो का जल लाकर डाला हुआ है।

2. सिद्धपुर में स्थित इसकी मान्यता मातृ श्राद्ध के लिये सर्वाधिक है। अतः इसे मातृ गया भी कहा जाता है।

नारायण सरोवर

कच्छ के रन में यह अति प्राचीन तीर्थ क्षेत्र है। इसका निर्माण गंगोत्री से पवित्र जल लाकर किया गया है। कार्तिक पूर्णिमा पर यहां एक बड़ा मेला लगता है। सरोवर के पास गोवर्धन नाथ, आदि नारायण तथा कोटेश्वर महादेव के मन्दिर है।

पम्पा सरोवर

तुंगभद्र नदी के दक्षिण में यह सरोवर स्थित है। दक्षिण भारत में जाते समय भगवान श्री राम ने इस सरोवर के किनारे विश्राम किया था। इसके पास ही शबरी गुफा भी स्थित है तथा पास की पहाडी पर कई छोटे – छोटे मन्दिर है।

पुष्कर झील

राजस्थान में स्थित पुष्कर झील सबसे अधिक पवित्र मानी जाती है। कहते है ब्रह्मा जी ने पुष्कर की स्थापना की थी। अतः सरोवर के निकट ब्रह्मा जी का विशाल भव्य मन्दिर है। यहां लगभग 400 मन्दिर है। इसलिये पुष्कर को मन्दिरों की नगरी कहा जाता है। यहां पर ब्रह्मा जी के मन्दिर के अतिरिक्त बद्रीनारायण मन्दिर, वाराह मन्दिर, कपालेश्वर महादेव मन्दिर तथा श्री रंग मन्दिर आदि प्रमुख है।

मानसरोवर

यह तिब्बत के शीतल पठार में स्थित है।

इसका जल अत्यन्त स्वच्छ है।

इसका आकार अंडाकार है।

सरयू और ब्रह्मपुत्र का उद्गम स्थल मानसरोवर को ही माना जाता है।

पास में ही गौरी कुण्ड है।

कहते है कि सती की दाहिनी हथेली यहां गिरी थी।

अतः इसकी मान्यता शक्ति पीठ के रूप में भी है।

सप्त पर्वत

1. हिमालय पर्वत
2. अरावली पर्वत
3. विन्ध्याचल पर्वत
4. रैवतक पर्वत
5. महेन्द्र पर्वत
6. मलय पर्वत
7. सह्याद्रि पर्वत

हिमालय पर्वत

•यह विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत है। जिसमें देवी – देवताओं का वास है।

•पवित्र नदियों का उद्‌गम स्थल है।

•बद्रीनाथ, केदारनाथ, कैलाश, मानसरोवर, वैष्णो देवी, अमरनाथ आदि पुण्य स्थल इसी पर है।

•भारत में 2400 कि0मी0 लम्बाई व 160 से 400 कि0मी0 चौडाई में स्थित है।

अरावली पर्वत

- दिल्ली के दक्षिण सिरे से प्रारम्भ होकर हरियाणा, राजस्थान व गुजरात तक यह पर्वतमाला फैली हुई है।
- यह पर्वत महाराणा प्रताप के उत्सर्ग, कर्तृत्व तथा शौर्य का साक्षी है।
- यह विश्व के प्राचीन पर्वतों में से एक है।

विन्ध्याचल पर्वत

- मध्यवर्ती भाग में गुजरात से लेकर बिहार व उत्कल तक फैला है।
- यह 40 हजार वर्ग मील क्षेत्र में फैला है। इसकी लम्बाई 100 कि0मी0 तथा औसत ऊँचाई 700 मी0 है।
- चम्बल, बेतवा, केन, क्षिप्रा, बनास, सोन नदियों का उदगम स्थल है। उज्जैयनी, जबलपुर, विन्ध्यवासिनी (मिर्जापुर), महाकाली मन्दिर (कालीखोह) तथा अष्टभुजा देवी आदि तीर्थ स्थल इसी में है।

रैवतक पर्वत (गिरनार)

- गुजरात प्रान्त के काठियावाड़ जिले में यह पर्वत माला स्थित है।
- भगवान शंकर ने भी यहाँ निवास किया था।
- जैन सम्प्रदाय का पवित्र स्थल शत्रुंजय या पालिताना यहीं है।
- सोमनाथ ज्योर्तिलिंग यहां से थोड़ी दूर ही स्थित है।

महेन्द्र पर्वत

- यह उडीसा का एक प्रमुख पर्वत है। जो गंजाम जिले में है।
- समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1500 मी0 है।
- गोकणेश्वर मन्दिर यहां का सबसे प्रमुख मन्दिर है।
- भगवान परशुराम का आवास इसी पर्वत पर है।

मलय पर्वत (नीलगिरी पर्वत)

- कर्नाटक के दक्षिण भाग तथा तमिलनाडु में यह पर्वत फैला है।
- यहां पर चंदन के सघन वन है।
- अनेक ऋषियों की यह तपस्या स्थल है।
- यहॉं पर अनेक औषधियों तथा मसालों की कृषि भी होती है।

सह्याद्री पर्वत

- भारत के पश्चिमी तट के साथ गुजरात, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक राज्य में मलय पर्वत का विस्तार है।
- गोदावरी, कृष्णा, कावेरी का उद्गम स्थल इसी पर्वत माला में है।
- त्र्यम्बकेश्वर, महाबलेश्वर, भीमशंकर, ब्रह्मगिरी, भगवती भवानी, बौद्ध चैत्य प्रसिद्ध तीर्थस्थल इसी क्षेत्र में है।
- शिवाजी महाराज की समाधी भी इसी पर्वत माला पर है।
- ब्रह्मा जी ने सृष्टि के प्रारम्भ में यहां पर यज्ञ किया था।

चार धाम

बद्रीनाथ

- बद्रीनाथ धाम भारत का सबसे प्राचीन तीर्थ क्षेत्र है।
- इसकी प्रतिष्ठा सतयुग में नारायण ने, त्रेता में भगवान दत्तात्रेय ने और द्वापर में वेदव्यास ने और कलियुग में आदिशंकराचार्य जी ने बढाई।
- बद्रीनाथ का मन्दिर नारायण पर्वत की तलहटी में अलखनंदा के दायें किनारे पर स्थित है।
- चन्द्रवंशी गढवाल नरेश ने मन्दिर को विशाल स्वरूप दिया।
- सर्दी के दिनों में बद्रीनाथ की चल प्रतिमा लाकर जोशीमठ में स्थापित की जाती है और यहीं पर इसकी पूजा – अर्चना होती है।

रामेश्वरम्

- तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरम् जिले में रामेश्वरम् नामक एक विशाल द्वीप पर यह पवित्र स्थल स्थापित है।
- इसकी स्थापना श्री राम जी ने की थी अत: इसका नाम रामेश्वर पड़ा।
- यह द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से एक है।
- इसके आस – पास अनेक मन्दिर है जैसे लक्ष्मणेश्वर शिव, पंचमुखी हनुमान, श्रीराम जानकी आदि मन्दिर।
- यहां 22 पवित्र कूप है जिनके जल से तीर्थ यात्री स्नान करके स्वयं को धन्य मानते है।

द्वारिका धाम

- आदिशंकराचार्य जी ने गुजरात में शारदा पीठ के रूप में इसकी स्थापना की।
- द्वारिका श्री कृष्ण की भी अतिप्रिय रहीं और अन्तिम समय भी यहीं पर व्यतीत किया।
- यहां के मन्दिरों में रणछोड़ राय भी एक प्रमुख मन्दिर है। इसे द्वारिकाधीश मन्दिर भी कहते है।
- महाप्रभु वल्लभाचार्य और श्री रामानुजाचार्य भी यहां पर पधारे थे।

जगन्नाथ पुरी

- जगन्नाथ पुरी उडीसा में गंगासागर तट पर स्थित है।
- यह शक्तिपीठ भी है।
- यहां श्री कृष्ण, बलराम और सुभद्रा की काष्ठ मूर्तियॉ प्रतिष्ठित है।
- इन मूर्तियों को रथयात्रा के अवसर पर निकालकर रथों में स्थापित कर समुद्रतट स्थित मौसी जी के मन्दिर में 10 दिन रखा जाता है।
- यात्रा में लाखों लोग भाग लेते है।
- जगन्नाथ पुरी से 18 कि0मी0 दूर साक्षी गोपाल मन्दिर है। इसके दर्शन के बिना जगन्नाथ पुरी की यात्रा अधूरी मानी जाती है

मोक्षदायिनी सप्तपुरियाँ

- अयोध्या
- मथुरा
- माया (हरिद्वार)
- काशी
- द्वारिका पुरी
- कांचिपुरम्
- अवन्तिका
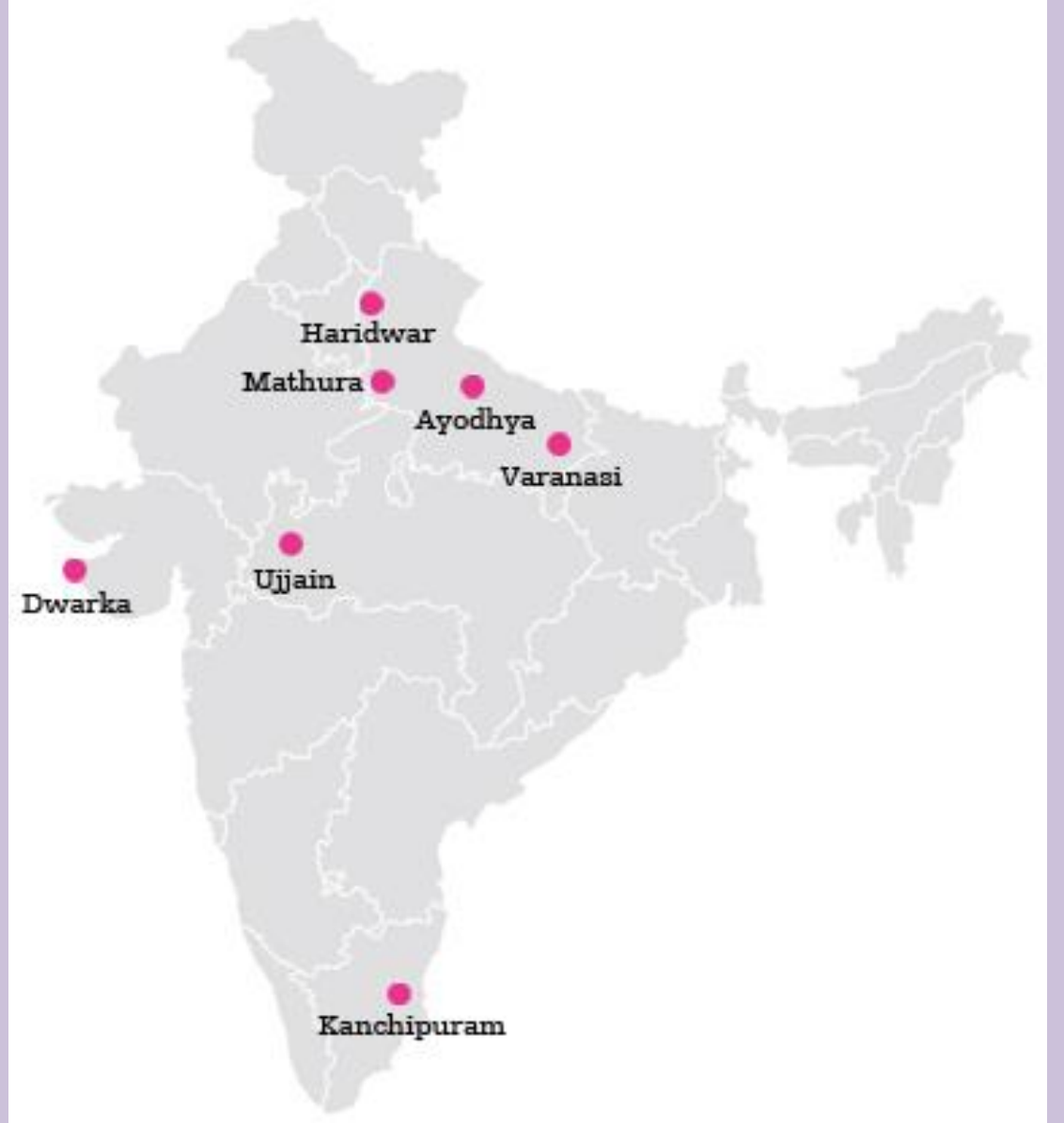
अयोध्या

- भगवान श्री राम का जन्म – स्थान अयोध्या सरयू के तट पर स्थित अति प्राचीन नगर है।
- सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने स्वयं यहां की यात्रा की और ब्रह्मकुण्ड की स्थापना की।
- अयोध्या न केवल वैष्णव सम्प्रदाय वरन् शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन सभी मतमतान्तरों का पवित्र स्थान है।
- यहां पर हनुमान गढी, कनक भवन, सीता रसोई, नागेश्वर मन्दिर, दर्शनेश्वर शिव मन्दिर आदि धार्मिक स्थान विद्यमान है।
- रामघाट, स्वर्गद्वार, ऋण मोचन, जानकी घाट, लक्ष्मण घाट आदि सरयू तट पर बने घाट है।

मथुरा

- मथुरा यमुना के दॉये किनारे पर स्थित पावन नगरी है|
- इसकी स्थापना भगवान श्री राम के छोटे भाई शत्रुघ्न ने त्रेतायुग में लवणासुर को मार कर की|
- ध्रुव ने यहीं पर तपस्या करके भगवत प्राप्ति की|
- श्री कृष्ण का जन्म मथुरा में ही हुआ था यहां कृष्ण जन्मभूमि पर एक भव्य मन्दिर सम्राट विक्रमादित्य ने बनवाया था|
- यहां पर द्वारिकाधीश जी का सबसे प्रसिद्ध मन्दिर है|

हरिद्वार

- हरिद्वार को मायापुरी या गंगाद्वार नाम से भी जाना जाता है।
- इतिहासकार इस तीर्थ को गंगाद्वार, वैष्णव तथा शैव हरिद्वार के नाम से पुकारते है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपने यात्रा – वृतान्त में हरिद्वार का वर्णन किया है।
- पवित्र गंगा यहीं पर मैदानी भाग में प्रवेश करती है।
- विल्वकेश्वर, नीलकण्ठ, गंगाद्वार, कनखल तथा कुशावर्त प्रमुख तीर्थ क्षेत्र है।
- हरिद्वार में कुम्भ का मेला प्रति 12वें वर्ष लगता है।
- इसके आस – पास के क्षेत्र में सप्तसरोवर, मनसादेवी, भीमगोडा, ऋषिकेश आदि तीर्थ स्थापित है।

काशी

- यह पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा के तट पर स्थित है।
- यहाँ पर शक्तिपीठ है, ज्योर्तिलिंग तथा सप्तपुरियों में से एक है।
- वरणा तथा असी नदी के मध्य स्थित होने के कारण इसका नाम वाराणसी प्रसिद्ध हुआ।
- भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश यहीं पास में सारनाथ में दिया।
- कबीर, रामानन्द, तुलसी जैसे संतो ने अपनी कर्मभूमि बनाया।
- मणिककर्णिका घाट, दशाश्वमेध घाट, केदारघाट, हनुमान घाट प्रमुख घाट है।

द्वारिका पुरी

- महाभारत, हरिवंश पुराण, वायुपुराण, भागवत, स्कन्द पुराण में द्वारिका का गौरवपूर्ण वर्णन है।
- बेट द्वारका, सुदामा पुरी (पोरबन्दर) पास में ही स्थित है।
- यहां सात मंजिलों वाला भव्य मन्दिर है जिसे द्वारकाधीश मन्दिर कहते है।
- रणछोड राय मन्दिर में स्थापित मूर्ति लाडवा ग्राम के एक कूप से प्राप्त हुई थी।

कांची पुरम्

- कांची पुरम् तमिलनाडु के चिन्गलपेठ जिले में मद्रास से लगभग 40 कि0मी0 दक्षिण पश्चिम में है।
- इस नगर में 108 शिव स्थल माने गये है।
- कामाक्षी, एकाम्बरनाथ, कैलाशनाथ, राजसिंघेश्वर, वरदराज यहां के प्रमुख मन्दिर है।
- जगदगुरू शंकराचार्य ने यहां कामकोटि पीठ की स्थापना की।

अवन्तिका (उज्जैन)

- अवन्तिका क्षिप्रा नदी के तट पर मध्य प्रदेश में बसा है।
- वर्तमान समय मे उज्जैन कहते है।
- यहां पर महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग स्थापित है।
- कनकश्रृंग, कुशस्थली, कुमुदवती, विशाला नाम से भी यह नगर जाना जाता है।
- भगवती सती का ऊर्ध्व ओष्ठ यहॉ पर गिरा था।
- कालिदास, वररूचि, भर्तृहरि, भारवि आदि का कर्मक्षेत्र रहा है।
- हरसिद्धदेवी, गोपाल मन्दिर, गढ़कालिका, कालभैरव, सिद्धवट, सांदीपनि आश्रम, यन्त्रमहल, भर्तृहरि गुफा यहां के महत्वपूर्ण स्थल है।

द्वादश ज्योर्तिलिंग

केदारनाथ

महाकालेश्वर

काशी विश्वनाथ

वैद्यनाथ

ओमकालेश्वर

नागेश्वर

सोमनाथ

धृष्णेश्वर

त्रयम्बकेश्वर

भीमाशंकर

मल्लिकार्जुन

रामेश्वरम
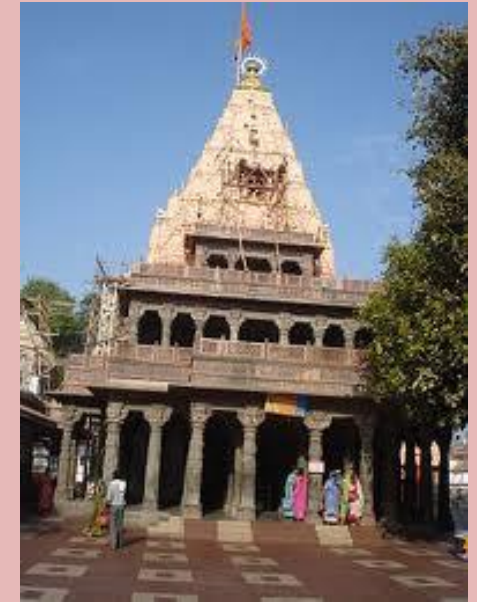
केदारनाथ ज्योर्तिलिंग

- केदारनाथ गढवाल (उत्तरांचल) में समुद्रतल से 6940 मी0 की ऊँचाई पर स्थित है।
- यहां सदैव बर्फ जमा रहता है।
- ग्रीष्म ऋतु में कुछ दिनों के लिये इसके कपाट खुलते है।
- केदारनाथ के पास से मन्दाकिनी निकलती है। जो आगे चलकर भागीरथी से मिलकर गंगा का रूप ले लेती है।

- यहां पास में गौरी कुण्ड है। जहां भगवती पार्वती ने स्नान किया था।
- हरिद्वार के कुम्भ के समय यहां की यात्रा का महत्व है।
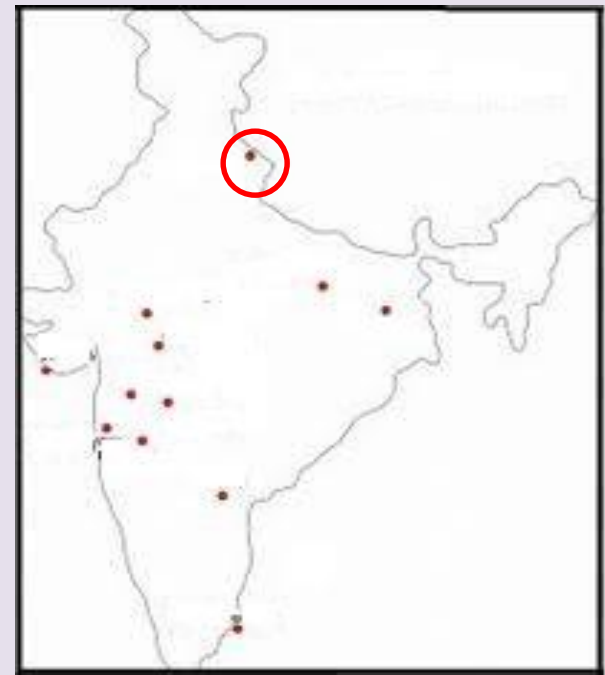
काशी विश्वनाथ ज्योर्तिलिंग

- विश्वनाथ ज्योर्तिलिंग काशी (उत्तर प्रदेश) में विराजमान है।
- भगवान शिव को काशी सर्वाधिक प्रिय है। यह अति प्राचीन तीर्थ स्थल है।
- धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व की काशी नगरी का वर्णन अनेक ग्रन्थों में किया गया है।
- इसे मुगल काल में क्षति भी पहुँचाई गई थी।
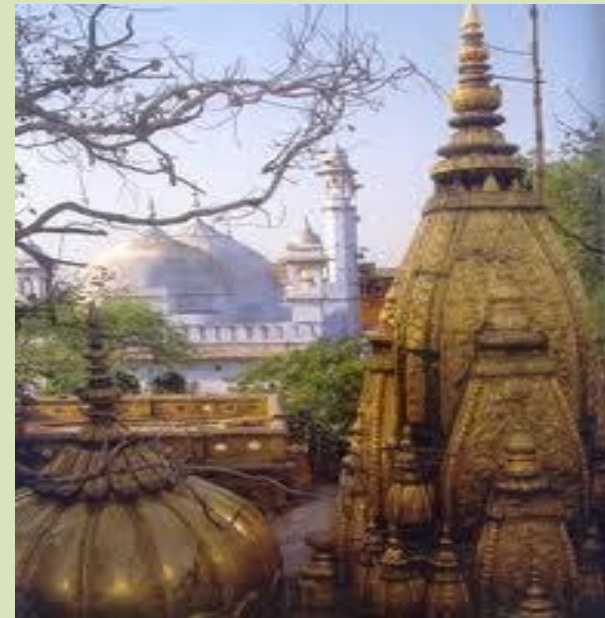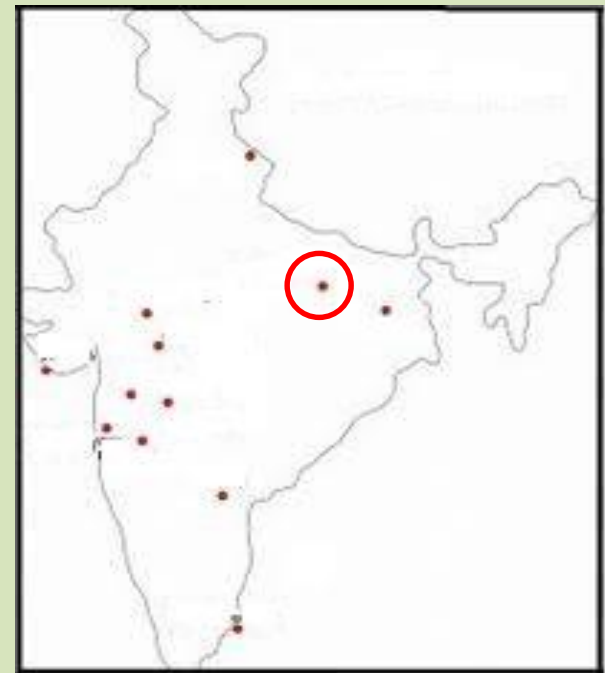
सोमनाथ ज्योर्तिलिंग

- सोमनाथ ज्योर्तिलिंग सौराष्ट्र (काठियावाड़) में विराजमान है।
- श्री कृष्ण के चरणों में यहीं पर जरा नामक व्याध का बाण लगा था।
- ऋगवेद, स्कन्द पुराण, श्रीमद्भागवत, शिव पुराण, महाभारत आदि ग्रन्थों इसकी महिमा का वर्णन किया गया है।
- सन् 1025 में महमूद गजनवीं ने इसकी पवित्रता नष्ट कर अकूत सम्पत्ति लूटी।
- परन्तु गुजरात के महाराजा भीम ने इसका पुनर्निर्माण करा दिया।
- दासता के काल में कालखण्ड में यह अनेक बार टूटा और हर बार इसका पुनर्निर्माण कराया गया।
- 11 मई 1951 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने मन्दिर में ज्योर्तिलिंग स्थापित कर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करायी।
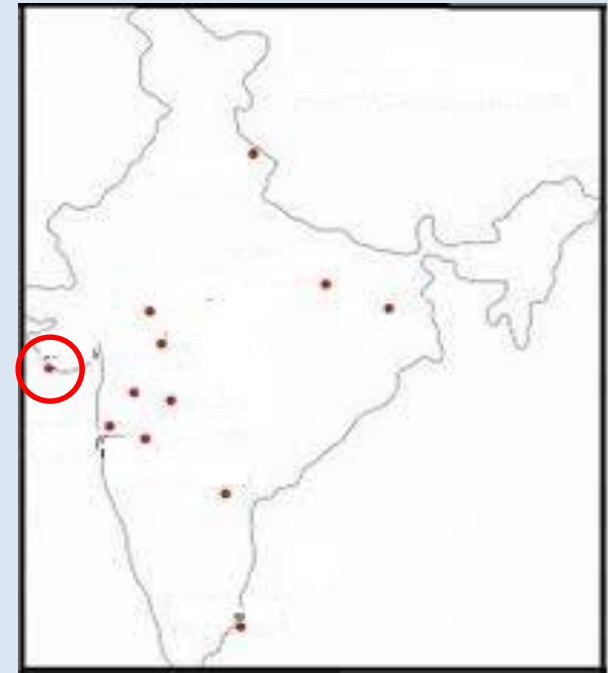
मल्लिकार्जुन ज्योर्तिलिंग

- यह ज्योर्तिलिंग श्रीशैल पर्वत पर स्थित है।
- यहां पार्वती को मल्लिका तथा शिव को अर्जुन नाम दिया गया है।
- पुरातत्ववेत्ता इसको डेढ से दो हजार वर्ष पुराना मानते है।
- मन्दिर के पश्चिमी दिशा में जगदम्बा का मन्दिर है।

- यहां सती का ग्रीवा पतन हुआ था।
- महाभारत के वनपर्व, शिव पुराण तथा पद्म पुराण में इस क्षेत्र का वर्णन किया गया है।
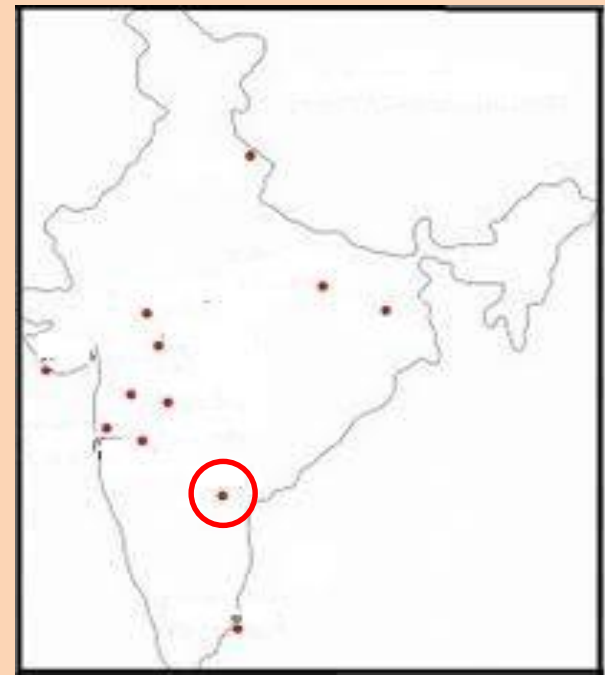
महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग

- यह ज्योर्तिलिंग क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित उज्जयिनी नगरी में है।
- यह सप्तपुरियों में से एक है।
- भगवान शंकर ने त्रिपुरासुर – वध यहीं किया था।
- मौर्यकाल में उज्जयनिी मालवा प्रदेश की राजधानी थी।
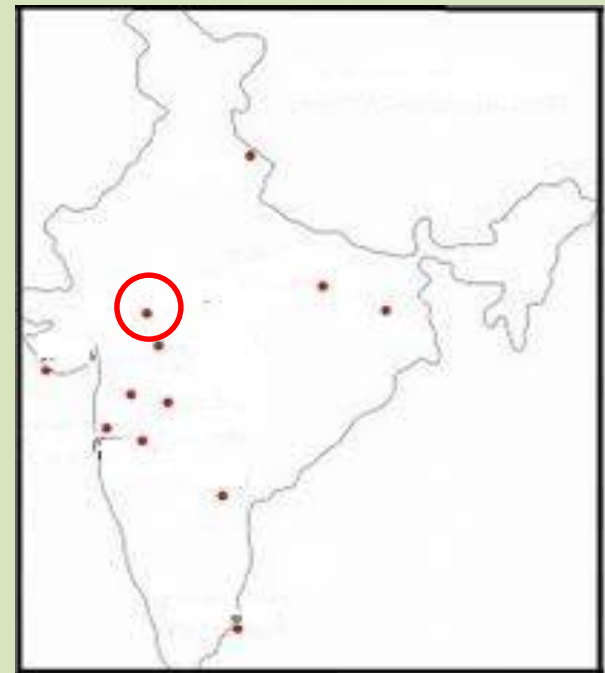
ओंकारेश्वर ज्योर्तिलिंग

- यह ज्योर्तिलिंग नर्मदा नदी के तट पर स्थित है।
- इक्ष्वाकुवंशीय राजा मान्धाता ने यहां भगवान शिव की पूजा की थी।
- यह ज्योर्तिलिंग दो स्थानों पर ओंकारेश्वर तथा अमरेश्वर के रूप में स्थित है।
- प्रतापी पेशवाओं ने इसका जीर्णोद्धार कराया।
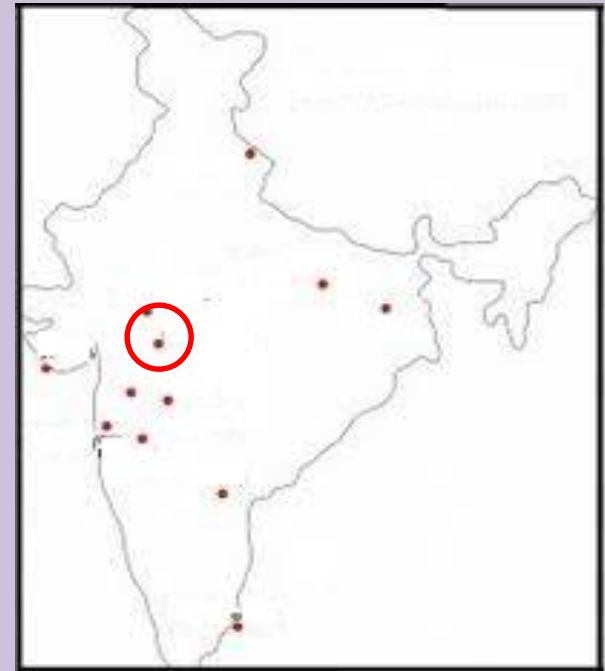
त्र्यम्बकेश्वर ज्योर्तिलिंग

- यह ज्योर्तिलिंग गोदावरी नदी के तट पर स्थित है।
- नासिक त्र्यम्बकेश्वर से लगभग 10 कि0मी0 दूरी पर स्थित है।
- यह ज्योर्तिलिंग सभी इच्छओं को पूर्ण करनेवाला तथा मोक्षप्रदाता है।
- पास में गंगा मन्दिर, परशुराम मन्दिर तथा गायत्री मन्दिर है।
- दूसरी ओर राम व लक्ष्मण कुण्ड विद्यमान है।
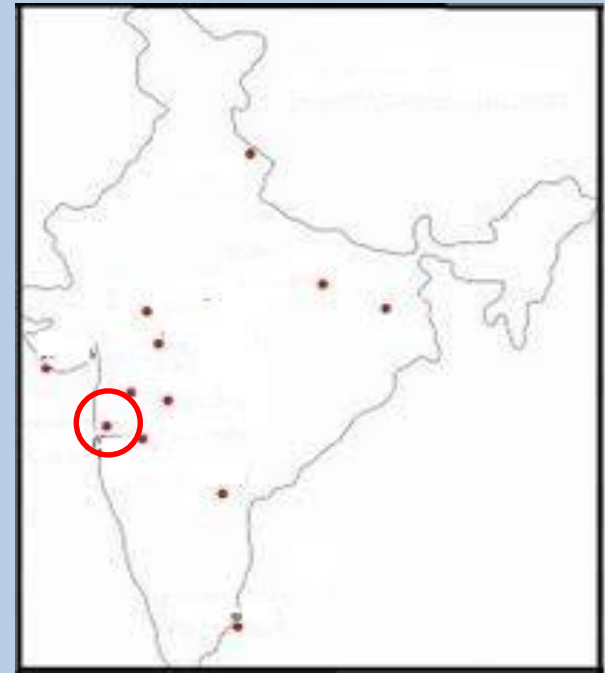
बैद्यनाथ ज्योर्तिलिंग

- यह ज्योर्तिलिंग झारखण्ड में देवघर नामक स्थान पर स्थित है।
- मुख्य मन्दिर 72 फीट उँचा है तथा साथ में 22 अन्य मन्दिर भी है। मान्यता है कि इसे स्वयं भगवान विश्वकर्मा ने बनवाया था।
- यह मनोकामना पूर्ण करने वाला तीर्थ है।
- इसी स्थल पर सती का हृदय गिरा था।
- पास में एक छोटा शिवकुण्ड नामक सरोवर भी है।
- कार्तिक, माघ और फाल्गुन की पूर्णिमा व चतुदर्शी को मेला लगता है।

नागेश्वर ज्योर्तिलिंग

- यह ज्योर्तिलिंग तीन स्थानों पर अवस्थित माना गया है।
- द्वारिका के पास, महाराष्ट्र में तथा उ0प्र0 में।
- आसपास ही वेणीनाग, धौले, कालिया जैसे नागों के स्थल होने के कारण यह नागेश्वर कहलाता है।
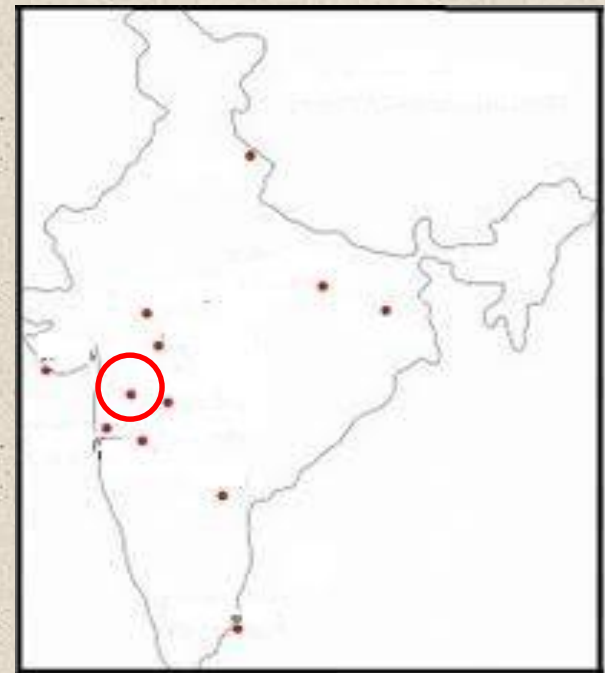
भीमाशंकर ज्योर्तिलिंग

- यह ज्योर्तिलिंग महाराष्ट्र में स्थित है।
- शिवपुराण के अनुसार भीम शंकर मन्दिर असम प्रदेश में गोहाटी के निकट ब्रह्मपुर में स्थित है।
- जहां पर यह मन्दिर है उसे डाकिनी शिखर भी कहते है।
- विशेष पर्व पर यहां मेले लगते है।
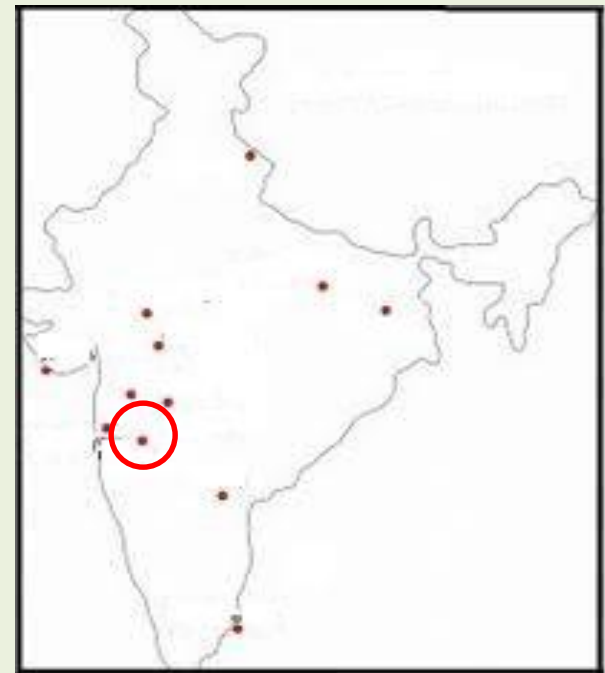
रामेश्वरम ज्योर्तिलिंग

•इस लिंग की स्थापना श्री राम ने की थी इसलिये इसका नाम रामेश्वरम पड़ा।

• तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरम् जिले में रामेश्वरम् नामक एक विशाल द्वीप पर यह पवित्र स्थल स्थापित है।

•यह द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से एक है।

• इसके आस – पास अनेक मन्दिर है जैसे लक्ष्मणेश्वर शिव, पंचमुखी हनुमान, श्रीराम जानकी आदि मन्दिर।

• यहां 22 पवित्र कूप है जिनके जल से तीर्थ यात्री स्नान करके स्वयं को धन्य मानते है।
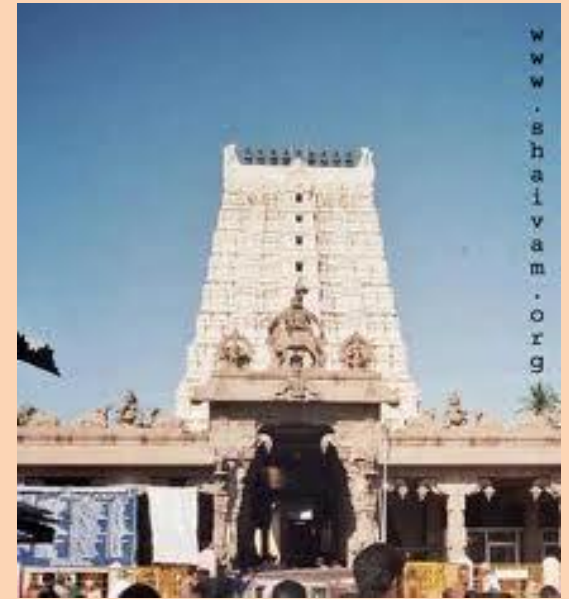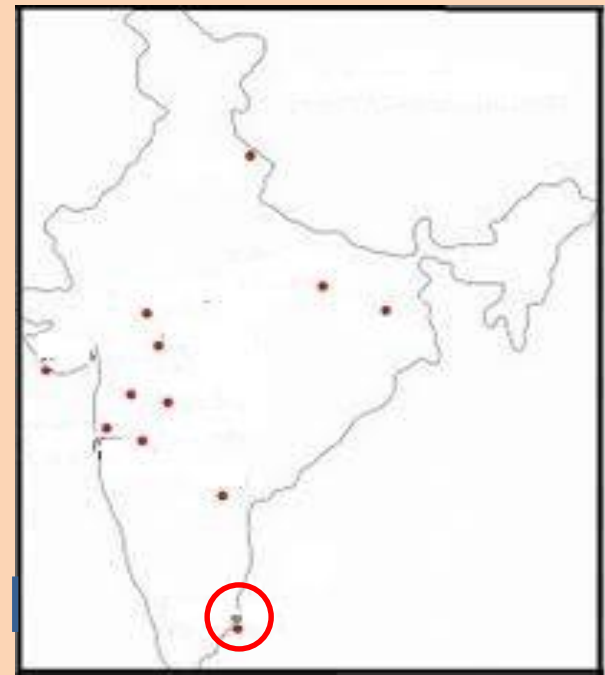
घुष्मेश्वर ज्योर्तिलिंग

- यह ज्योर्तिलिंग दौलताबाद के पास स्थित वेरूल गॉव में स्थित है।
- इसकी स्थापना पतिपरायणा तथा शिवभक्तिन घुश्मा की तपस्या तथा निष्काम भावना के कारण हुई।
- महारानी अहल्याबाई ने यहां अति सुन्दर मन्दिर का निर्माण करवाया।
- पास में ही सहस्त्रलिंग, पातालेश्वर व सूर्येश्वर के मन्दिर है।
- श्रावण पूर्णिमा तथा महाशिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है।